॥ कृष्णयजुर्वेदीया श्रीरुद्रनामत्रिशती ॥

■ अंकुर नागपाल

॥ श्रीगणेशाम्बागुरुभ्यो नमः ॥

ध्यानम् :

ब्रह्माण्डव्याप्तदेहा भसितहिमरुचा भासमाना भुजङ्गैः
कण्ठे कालाः कपर्दाकलित शशिकलाश्चण्डकोदण्डहस्ताः।
त्र्यक्षा रुद्राक्षमालाः प्रणतभयहराः शाम्भवा मूर्तिभेदाः
रुद्राः श्रीरुद्रसूक्तप्रकटितविभवा नः प्रयच्छन्तु सौख्यम्।।

नमस्कार :

नमस्तेऽस्तु भगवद्विश्वेश्वराय महादेवाय
त्र्यम्बकाय त्रिपुरान्तकाय त्रिकाग्निकालाय
कालाग्निरुद्राय नीलकण्ठाय मृत्युञ्जयाय
सर्वेश्वराय सदाशिवाय श्रीमन्महादेवाय नमः।।

॥ नमो भगवते रुद्राय ॥

1. हिरण्यबाहवे नमः। 2. सेनान्ये नमः। 3. दिशां च पतये नमः। 4. वृक्षेभ्यो नमः। 5. हरिकेशेभ्यो नमः। 6. पशूनां पतये नमः। 7. सस्पिञ्जराय नमः। 8. त्विषीमते नमः। 9. पथीनां पतये नमः। 10. बभ्लुशाय नमः। 11. विव्याधिने नमः। 12. अन्नानां पतये नमः। 13. हरिकेशाय नमः। 14. उपवीतिने नमः। 15. पुष्टानां पतये नमः। 16. भवस्य हेत्यै नमः। 17. जगतां पतये नमः। 18. रुद्राय नमः। 19. आततायिने नमः। 20. क्षेत्राणां पतये नमः। 21. सूताय नमः। 22. अहन्त्याय नमः। 23. वनानां पतये नमः। 24. रोहिताय नमः। 25. स्थपतये नमः। 26. वृक्षाणां पतये नमः। 27. मन्त्रिणे नमः। 28. वाणिजाय नमः। 29. कक्षाणां पतये नमः। 30. भुवन्तये नमः। 31. वारिवस्कृताय नमः। 32. ओषधीनां पतये नमः। 33. उच्चैर्घोषाय नमः। 34. आक्रन्दयते नमः। 35. पत्तीनां पतये नमः। 36. कृत्स्नवीताय नमः। 37. धावते नमः। 38. सत्त्वनां पतये नमः। (卐)

39. नमः सहमानाय नमः। 40. निव्याधिने नमः। 41. आव्याधिनीनां पतये नमः। 42. ककुभाय नमः। 43. निषङ्गिणे नमः। 44. स्तेनानां पतये नमः। 45. निषङ्गिणे नमः। 46. इषुधिमते नमः। 47. तस्कराणां पतये नमः। 48. वञ्चते नमः। 49. परिवञ्चते नमः। 50. स्तायूनां पतये नमः। 51. निचेरवे नमः। 52. परिचराय नमः। 53. अरण्यानां पतये नमः। 54. सृकाविभ्यो नमः। 55. जिघाङ्सद्भ्यो नमः। 56. मुष्णतां पतये नमः। 57. असिमद्भ्यो नमः। 58. नक्तञ्चरद्भ्यो नमः। 59. प्रकृन्तानां पतये नमः। 60. उष्णीषिणे नमः। 61. गिरिचराय नमः। 62. कुलुञ्चानां पतये नमः। 63. इषुमद्भ्यो नमः। 64. धन्वाविभ्यश्च नमः। 65. वो नमः। 66. आतन्वानेभ्यो नमः। 67. प्रतिदधानेभ्यो नमः। 68. वो नमः। 69. आयच्छछद्भ्यो नमः। 70. विसृजद्भ्यो नमः। 71. वो नमः। 72. अस्यद्भ्यो नमः। 73. विध्यद्भ्यो नमः। 74. वो नमः। 75. आसीनेभ्यो नमः। 76. शयानेभ्यो नमः। 77. वो नमः। 78. स्वपद्भ्यो नमः। 79. जाग्रद्भ्यो नमः। 80. वो नमः। 81. तिष्ठद्भ्यो नमः। 82. धावद्भ्यो नमः। 83. वो नमः। 84. सभाभ्यो नमः। 85. सभापतिभ्यो नमः। 86. वो नमः। 87. अश्वेभ्यो नमः। 88. अश्वपतिभ्यो नमः। 89. वो नमः। (卐)



90. आव्यधिनीभ्यो नमः। 91. विविध्यन्तीभ्यो नमः। 92. वो नमः। 93. उगणाभ्यो नमः। 94. तृंहतीभ्यो नमः। 95. वो

नमः। 96. गृत्सेभ्यो नमः। 97. गृत्सपतिभ्यो नमः। 98. वो नमः। 99. व्रातेभ्यो नमः। 100. व्रातपतिभ्यो नमः। 101. वो नमः। 102. गणेभ्यो नमः। 103. गणपतिभ्यो नमः। 104. वो नमः। 105. विरूपेभ्यो नमः। 106. विश्वरूपेभ्यो नमः। 107. वो नमः। 108. महद्भ्यो नमः। 109. क्षुल्लकेभ्यो नमः। 110. वो नमः। 111. रथिभ्यो नमः। 112. अरथेभ्यो नमः। 113. वो नमः। 114. रथेभ्यो नमः। 115. रथपतिभ्यो नमः। 116. वो नमः। 117. सेनाभ्यो नमः। 118. सेनानिभ्यो नमः। 119. वो नमः। 120. क्षत्तृभ्यो नमः। 121. सङ्ग्रहीतृभ्यो नमः। 122. वो नमः। 123. तक्षभ्यो नमः। 124. रथकारेभ्यो नमः। 125. वो नमः। 126. कुलालेभ्यो नमः। 127. कर्मारेभ्यो नमः। 128. वो नमः। 129. पुञ्जिष्टेभ्यो नमः। 130. निषादेभ्यो नमः। 131. वो नमः। 132. इषुकृद्भ्यो नमः। 133. धन्वकृद्भ्यो नमः। 134. वो नमः। 135. मृगयुभ्यो नमः। 136. श्वनिभ्यो नमः। 137. वो नमः। 138. श्वभ्यो नमः। 139. श्वपतिभ्यो नमः। 140. वो नमः। (卐)

141. भवाय नमः। 142. रुद्राय नमः। 143. शर्वाय नमः। 144. पशुपतये नमः। 145. नीलग्रीवाय नमः। 146. शितिकण्ठाय नमः। 147. कपर्दिने नमः। 148. व्युप्तकेशाय नमः। 149. सहस्राक्षाय नमः। 150. शतधन्वने नमः। 151. गिरिशाय नमः। 152. शिपिविष्टाय नमः। 153. मीढुष्टमाय नमः। 154. इषुमते नमः। 155. ह्रस्वाय नमः। 156. वामनाय नमः। 157. बृहते नमः। 158. वर्षीयसे नमः। 159. वृद्धाय नमः। 160. संवृध्वने नमः। 161. अग्रियाय नमः। 162. प्रथमाय नमः। 163. आशवे नमः। 164. अजिराय नमः। 165. शीघ्रियाय नमः। 166. शीभ्याय नमः। 167. ऊर्म्याय नमः। 168. अवस्वन्याय नमः। 169. स्त्रोतस्याय नमः। 170. द्वीप्याय नमः। (卐)

171. ज्येष्ठाय नमः। 172. कनिष्ठाय नमः। 173. पूर्वजाय नमः। 174. अपरजाय नमः। 175. मध्यमाय नमः। 176. अपगल्भाय नमः। 177. जघन्याय नमः। 178. बुध्नियाय नमः। 179. सोभ्याय नमः। 180. प्रतिसर्याय नमः। 181. याम्याय नमः। 182. क्षेम्याय नमः। 183. उर्वर्याय नमः। 184. वल्याय नमः। 185. श्लोक्याय नमः। 186. अवसान्याय नमः। 187. वन्याय नमः। 188. कक्ष्याय नमः। 189. श्रवाय नमः। 190. प्रतिश्रवाय नमः। 191. आशुषेणाय नमः। 192. आशुरथाय नमः। 193. शूराय नमः। 194. अवभिन्दते नमः। 195. वर्मिणे नमः। 196. वरूथिने नमः। 197. बिल्मिने नमः। 198. कवचिने नमः। 199. श्रुताय नमः। 200. श्रुतसेनाय नमः। (卐)

201. दुन्दुभ्याय नमः। 202. आहनन्याय नमः। 203. धृष्णवे नमः। 204. प्रमृशाय नमः। 205. दूताय नमः। 206. प्रहिताय नमः। 207. निषङ्गिणे नमः। 208. इषुधिमते नमः। 209. तीक्ष्णेषवे नमः। 210. आयुधिने नमः। 211. स्वायुधाय नमः। 212. सुधन्वने नमः। 213. स्रुत्याय नमः। 214. पथ्याय नमः। 215. काट्याय नमः। 216. नीप्याय नमः। 217. सूद्याय नमः। 218. सरस्याय नमः। 219. नाद्याय नमः। 220. वैशन्ताय नमः। 221. कूप्याय नमः। 222. अवट्याय नमः। 223. वर्ष्याय नमः। 224. अवर्ष्याय नमः। 225. मेघ्याय नमः। 226. विद्युत्याय नमः। 227. ईध्रियाय नमः। 228. आतप्याय नमः। 229. वात्याय नमः। 230. रेष्मियाय नमः। 231. वास्तव्याय नमः। 232. वास्तुपाय नमः। (卐)

233. सोमाय नमः। 234. रुद्राय नमः। 235. ताम्राय नमः। 236. अरुणाय नमः। 237. शङ्गाय नमः। 238. पशुपतये नमः। 239. उग्राय नमः। 240. भीमाय नमः। 241. अग्रेवधाय नमः। 242. दूरेवधाय नमः। 243. हन्त्रे नमः। 244. हनीयसे नमः। 245. वृक्षेभ्यो नमः। 246. हरिकेशेभ्यो नमः। 247. ताराय नमः। 248. शम्भवे नमः। 249. मयोभवे नमः। 250. शङ्कराय नमः। 251. मयस्कराय नमः। 252. शिवाय नमः। 253. शिवतराय नमः। 254. तीर्थ्याय नमः। 255. कूल्याय नमः। 256. पार्याय नमः। 257. अवार्याय नमः। 258. प्रतरणाय नमः। 259. उत्तरणाय नमः। 260. आतार्याय नमः। 261. आलाद्याय नमः। 262. शष्प्याय नमः। 263. फेन्याय नमः। 264. सिकत्याय नमः। 265. प्रवाह्याय नमः। (卐)

266. इरिण्याय नमः। 267. प्रपथ्याय नमः। 268. किंशिलाय नमः। 269. क्षयणाय नमः। 270. कपर्दिने नमः। 271. पुलस्तये नमः। 272. गोष्ठ्याय नमः। 273. गृह्याय नमः। 274. तल्प्याय नमः। 275. गेह्याय नमः। 276. काट्याय नमः। 277. गह्वरेष्ठाय नमः। 278. ह्रदय्याय नमः। 279. निवेष्प्याय नमः। 280. पांसव्याय नमः। 281. रजस्याय नमः। 282. शुष्क्याय नमः। 283. हरित्याय नमः। 284. लोप्याय नमः। 285. उलप्याय नमः। 286.

ऊर्व्याय नमः। 287. सूर्म्याय नमः। 288. पर्ण्याय नमः। 289. पर्णशद्याय नमः। 290. अपगुरमाणाय नमः। 291. अभिघ्नते नमः। 292. आक्खिदते नमः। 293. प्रक्खिदते नमः। 294. वो नमः। 295. किरिकेभ्यो नमः। 296. देवानां हृदयेभ्यो नमः। 297. विक्षीणकेभ्यो नमः। 298. विचिन्वत्केभ्यो नमः। 299. आनिर्हतेभ्यो नमः। 300. आमीवत्केभ्यो नमः। (卐)

॥ नमो भगवते रुद्राय ॥

क्षमापनम् :

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा
श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम् ।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व जय जय
करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो ।।

:: टिप्पणी ::

रुद्राध्याय (कृष्णयजुर्वेद-चतुर्थकाण्ड-चतुर्थप्रश्न) में एकादश रुद्रों के प्रतीकभूत कुल ग्यारह अनुवाक हैं; जिनमें प्रथम अनुवाक भगवान् शिव के षोडशोपचार-पूजन में विनियुक्त है। तदनन्तर द्वितीय अनुवाक से लेकर नवम अनुवाक पर्यन्त (इस प्रकार शिवजी की भव-शर्व-रुद्रादि आठ मूर्तियों के प्रतीकभूत आठ अनुवाकों में) भगवान् शिव को विविध प्रकार से नमस्कार निवेदित किए गए हैं; अतः इसी को 'नमकप्रश्न' भी कहते हैं। जबकि शेष दो अनुवाकों में भगवान् रुद्र से विविध पदार्थों को प्रदान करने हेतु प्रार्थना की गई हैं; जिसमें 'च मे, च मे' की पुनरावृत्ति के कारण उसे 'चमकप्रश्न' कहते हैं। इन ग्यारहों अनुवाकों में स्तुतिसन्दर्भ में 'नमकप्रश्न' कहलाने वाले आठ अनुवाकों का ही विशेष महत्त्व है। उन आठ अनुवाकों में भगवान् रुद्र के तीन-सौ नाम संकलित हैं, जिसे 'रुद्रत्रिशती' अथवा 'रुद्रनामत्रिशती' कहा जाता है। सम्भवतः चारों वेदों में अन्यत्र कहीं ऐसी नामावली प्राप्त नहीं होती, इसी से इसकी विलक्षणता चरितार्थ है। इसके पारायण से वेदपुरुष भगवान् रुद्र की विशेष कृपा प्राप्त होती है। महाभारत (7.202.148-152) में श्रीवेदव्यासजी अर्जुन को उपदेश करते हैं : 'रुद्राध्याय परमपवित्र धन-धान्य-यश-आयु का वर्धक तथा सर्वमनोरथसाधक है। इसके पारायण से पापनिवृत्ति तथा सर्वदुःखभयनिवारण होता है। इसके पाठ व श्रवण से मनुष्यों में भगवान् विश्वनाथ के प्रति विशेष भक्तिभाव प्रादुर्भूत होता है तथा शिवकृपा से उनकी सभी कामनाएँ पूर्ण होतीं हैं'।

किन्तु वेद का अंग होने से इसके पाठ में सभी को साक्षात् अधिकार प्राप्त नहीं है; कारण कि 'सत्सन्तानप्रसूत-सदाचारनिष्ठात्मगुणोपेत-वेदविदाचार्योपनीतस्य व्रतनियम-विशेषयुक्तस्य आचार्योच्चारणानूच्चारणरूपम् अक्षरराशि-ग्रहणफलम् अध्ययनम् इत्यवगम्यते। अध्ययनं च स्वाध्यायसंस्कारः' अर्थात् कुलीन, सदाचारनिष्ठ, आत्मगुण से युक्त, किन्हीं वेदज्ञ आचार्य के द्वारा उपनीत, विशिष्ट व्रतनियम वाले (ब्रह्मचारी) का अपने आचार्य के द्वारा उच्चरित अक्षरराशि का ग्रहण करके पुनः उसका उच्चारण करना 'अध्ययन' है यह ज्ञात होता है। और 'स्वाध्यायोऽध्येतव्यः' इत्यादि श्रुति में अध्ययन तो स्वाध्याय का कर्म है, अतः अध्ययन स्वाध्याय-संस्कार ही है (श्रीभाष्य 1.1.1)। इस प्रकार; यज्ञोपवीत एवं गुरुपरम्परापूर्वक वेदाध्ययन से रहित या उसमें अनधिकृत व्यक्तियों के लिए साक्षात् रुद्रप्रश्न का पाठ करना अनुचित है। एतावता; नमकप्रश्न में आए श्रीरुद्रभगवान् के उन तीन-सौ नामों की नामावली यहाँ संकलित है, जिसका पाठ करने में मनुष्यमात्र को अधिकार है; क्योंकि यह नामावली सजातीयोच्चारण-सापेक्षोच्चारण का विषय न होने से अपौरुषेय नहीं रही। फलतः इस रुद्रत्रिशती के पाठ में सबको अधिकार प्राप्त हो जाता है तथा श्रीमद्भागवत के 'स्त्रीशूद्रद्विजबन्धूनां त्रयी न श्रुतिगोचरा' (1.4.25) इत्यादि वचनों तथा ब्रह्मसूत्र के अपशूद्राधिकरण की रक्षा भी हो जाती है। इस कृत्य का समर्थन श्रीगौरांगमहाप्रभु की एक लीला से भी होता है; जहाँ उन्होंने साक्षात् कृष्णयजुर्वेदीय कलिसन्तरणोपनिषद् में पठित 'हरे राम हरे राम ...' इत्यादि मन्त्र की आनुपूर्वी बदलकर उसे जीवमात्र के लिए जाप्य बना दिया। इस प्रकार; सनातनवैदिकधर्म में आस्थान्वित प्रत्येक श्रद्धालु को आगामी महाशिवरात्रि के दिन प्रतिदिन श्रीरुद्रत्रिशती-नामावली का पाठ करना चाहिए। दक्षिणभारत के श्रीरमणाश्रम (तिरुवन्नमळई, तमिळनाडु) आदि में श्रीरुद्रत्रिशती के पाठ की परम्परा अक्षुण्णरूप में चल रही है। इत्यलम्।

नोट : नामावली में (卐) चिह्न अनुवाकपूर्ति का द्योतक है।